हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G. II Sem

"क्या भूलूँ क्या याद करूँ" के आधार पर बच्चन के आत्म-कथा लेखन के प्रयोजन का विवेचन करें।

कोई भी कृति प्रयोजन रहित नहीं होती है। आत्मकथा लेखन के क्रम में बच्चन ने निम्नलिखि[त] प्रयोजनों को दृष्टिपथ में रखा है —

आत्मप्रकाशन की अदम्य भावना — बच्चन ने कहा है — "मैं यह भी बताना चाहता था कि आत्म-चित्रण मैंने किस मनोवृत्ति से किया है, पर जब शब्दों में उसे [मै]ं बता सकता था, उनसे कहीं अधिक समर्थ और सशक्त शब्दों में आज से लगभग चार सौ [वर्]ष पूर्व फ्रांस का एक महान लेखक, मानतेन अपना [आत्]म-चित्रण करते समय उसे व्यक्त कर चुका है। [...] आप इस आत्म-चित्रण को पढ़े, आप उसे [...] लें। आप इसे कृति के प्रथम पृष्ठ के पूर्व पायेंगे [...] चाहता हूँ कि लोग मुझे मेरे सरल, स्वाभा[विक] साधारण रूप में देख सकें। मैं अपने

गुण-दोष जग-जीवन के सम्मुख रखने जा रहा हूँ,
पर ऐसी स्वाभाविक शैली में जो लोक-शील से मर्यादित हो।"
जब लेखक की भावनाएँ अभिव्यक्ति-हेतु
आतुर होती हैं तो वह अपने सृजन में विवश होकर
लीन हो जाता है। इस स्थिति में बच्चन अपनी भूमिका
में लिखते हैं—" लेखन द्वारा अपने को अभिव्यक्त करते
हुए 40 वर्षों से अधिक हो चुके हैं। मैं हृदय पर
हाथ रखकर कह सकता हूँ कि मैंने ऐसा कुछ नहीं
लिखा जो मेरे अन्तर में नहीं उठा, और उसमें नहीं
घुमड़ा। ... मुझे कई वर्षों से लग रहा था,
कि मैं अपने अन्तर में निरन्तर उठती स्मृतियों को
न कर डालूँगा, तब तक मेरा मन शांत नहीं होगा।"
वैसे तो लेखक अपने भोगे हुए यथार्थ जीवन
अभिव्यक्ति सम्पूर्ण कलाओं में प्रकारान्तर से करता
है। लेकिन आत्मकथा में यह स्थिति अत्यन्त

National Youth Day

भी है और वांछनीय भी। बच्चन की
इसका स्पष्ट निदर्शन है। उन्होंने कहा है कि
आत्मसंस्कारी है, वैसे ही आत्मकथा

[illegible] को
[illegible] है। [illegible] पड़ी। [illegible]
[illegible] मैंने पढ़ा
[illegible]
[illegible] इतना [illegible] इनके ही [illegible]
[illegible] कभी नहीं किया।"
[illegible] में अपने जीवन में [illegible] की भाँति [illegible]
किसी मानसिक [illegible] की
आत्मरहस्यों द्घाटन की उद्घोषणा इस कृति में नहीं
है। किन्तु लेखक ने अनेक स्थानों पर प्रतिपादित किया
है कि आत्मकथा लिखकर उसे पूर्णतृप्ति और मुक्ति
का अहसास हुआ है। जिस प्रकार इतिहास पुरुष
ऐतिहासिक तथ्यों का विवेचन करते हैं, उसी प्रकार लेख
या कलाकार अपनी आत्मकथाओं में अपनी रच
सृजन-प्रक्रिया की विवेचन करने का विशेषाधिकार
वैसे जीवनी में भी यदि वे किसी साहित्य
रचनाप्रक्रिया का वर्णन अवश्य करते हैं।
यथार्थ चित्रण आत्मकथा में संभव
ही नहीं हो सकती। इस आत्मकथा में

e is moving forward together, then success takes care of itself. – Henry Ford

Week - 3rd • 014-352

और परोक्ष दोनों रूपों में रचना-प्रक्रिया का विवेचन हुआ है, जैसे — "मुझे याद है, मैंने उसके बालों की एक लट अपनी उँगली में लपेट ली और आँखें मूँद ली पर न श्यामा सो रही थी और न मैं सो रहा था। बहुत दिनों बाद मैं उस रात के भावों को वाणी देने योग्य अपने को पा सका।

"मधुशाला" से मेरे चेतन, अवचेतन, अतिचेतन, उर, अनुभूति में संचित स्मृति-कल्पना, भय, आशा, आशा, वेदना-संवेदना, हर्ष-विमर्श-संघर्ष सबका बड़ा हुआ। 'मधुशाला' के बाद मैंने 'मधुबाला' के लिखना शुरू किया जैसे अभी पूरा क्षरण नहीं हुआ। वास्तव में वह पूर्ण 'मधुकलश' के साथ हुआ। ... के विवेचन-विश्लेषण से बच्चन की आत्मकथा ... खण्ड भरे पड़े हैं और यही स्थान आत्मकथा ... -तत्व भी है। बच्चन ने अपनी इस आत्म... में परनिन्दा और आक्षेप या कटाक्ष करने ... बचना चाहा है। लेकिन फिर भी कुछ स्थ... गये हैं। जैसे सुमित्रानन्दन पंत के विषय में कटाक्ष जैसी ही है — जब ...

तुकबन्दी सधने लगी और मैं अपने कवि होने की संभावना से व्याकुल होने लगा, तो मैंने भी अपने काव्य को बढ़ने के लिए छोड़ दिया। मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूँ कि मेरा अनुसरण उनके बालों तक ही सीमित रहा, यदि मैं उनकी शैली का अनुकरण करता तो डूब गया होता।"

आत्मकथा की विशिष्ट उपयोगिता है कि उससे प्राप्त करके आगामी पीढ़ियों को अपने पथ आने वाले कंटकों और कंकरों का ज्ञान हो सके। कारण आत्मकथा वैयक्तिक निधि होकर भी सर्वलोक हिताय सिद्ध होती है। वैसे भी मानवीय जीवन में सामाजिकता की सुदृढ़ नींव और भित्ति इसी प्रकार तैयार होती है कि पूर्व पीढ़ी के उदाहरण आगामी पीढ़ी के लिए मील पत्थरों के निशान बन जा